

सरकारी नौकरी : अब होम डिलीवरी उपलब्ध (व्यंग्य)

राजनीति में वादों की बारिश का मौसम आ गया है। पहले सरकारी नौकरी पाने के लिए परीक्षा देनी होती थी, अब बस सही पार्टी चुननी है। प्रदेश में हर परिवार को एक सरकारी नौकरी का वादा सुनकर लगता है कि जादू की छड़ी मिल गई है। पहले लोग कहते थे कि पैसा पेड़ पर नहीं उगता, लेकिन अब लगता है कि नौकरियां जरूर उगती हैं। बस एक बटन दबाओ और हर घर में एक सरकारी कर्मचारी। सवाल यह नहीं है कि काम क्या होगा, सवाल यह है कि तनख्वाह कहां से आएगी। शायद खजाना भी अब असीमित हो गया है। अगर हर परिवार में एक सरकारी नौकरी होगी तो कौन खेती करेगा, कौन दुकान चलाएगा, कौन फैक्टरी में काम करेगा? शायद वह भी सरकारी हो जाएगा। पूरा प्रदेश सरकारी बाबुओं का गढ़ बन जाएगा। सुबह सब दफ्तर जाएंगे, फाइलें घुमाएंगे, चाय पिएंगे और शाम को घर लौट आएंगे। चुनाव के समय वादों की यह बाढ़ हर बार आती है। जनता भी समझदार है, वह जानती है कि इंद्रधनुष सुंदर होता है लेकिन हाथ नहीं आता। फिर भी उम्मीद का दामन थामे रखना पड़ता है। आखिर सपने देखना तो मुफ्त है। असली सवाल यह है कि विकास का खर्चा कौन उठाएगा जब सबको तनख्वाह देनी होगी? सड़कें, बिजली, पानी, अस्पताल, स्कूल सबके लिए पैसा कहां से आएगा? या फिर यह भी सरकारी कर्मचारी ही संभालेंगे? चुनाव का मौसम है, वादों की बारिश होगी। बुद्धिमान वही है जो छाता लेकर चले, नहीं तो भीगना तय है। लेखक की टिप्पणी: वाह! क्या शानदार युग आ गया है। पहले लोग नौकरी के लिए भटकते थे, अब नौकरी खुद घर आएगी। डाकिया चिट्ठी की जगह नियुक्ति पत्र लाएगा। बस एक वोट दो और सरकारी मुहर लगी नौकरी घर पहुंच जाएगी। हमें तो लगता है कि अगले चुनाव में कोई कहेगा कि हर परिवार को एक मंत्री पद मिलेगा। फिर कोई कहेगा कि हर घर में एक हेलीकॉप्टर। आखिर वादों की दुनिया में कोई सीमा तो होनी नहीं चाहिए। पुराने जमाने के नेता बड़े भोले थे। वे सड़क, बिजली, पानी जैसी छोटी चीजों के वादे करते थे। आज के नेता सीधे स्वर्ग का टिकट बांट रहे हैं। कल को कोई कहेगा कि हर व्यक्ति को महल मिलेगा, नौकर मिलेंगे और राजा बनने का मौका मिलेगा। सबसे मजेदार बात यह है कि जनता भी तालियां बजाती है। शायद यह खेल दोनों तरफ से चल रहा है। एक बांटता है सपने, दूसरा खरीदता है उम्मीदें। फिर चुनाव के बाद दोनों अपनी अपनी राह चले जाते हैं। लेकिन एक बात तय है, जब तक जनता भूलभुलैया में रहेगी, नेता जादूगर बने रहेंगे। असली सवाल यह नहीं कि वादा क्या है, सवाल यह है कि वादा पूरा होगा या बस अगले चुनाव तक टिकेगा।

- डॉ. पीयूष राजा, व्यंग्यकार, स्तंभकार एवं शिक्षक, बिहार